सालाना रिपोर्ट

अप्रैल 2021 से मार्च 2022

SADBHAVANA TRUST

@sadbhavanatrust.lucknow @lucknowleaders @sadbhavanalko12 #lucknowleaders sadbhavanalko12@gmail.com

सूची

क्र.स.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	संस्था का परिचय	3–4
2.	उपलब्धियां	4
3.	समुदाय आधारित गतिविधियां	4–13
4.	लखनऊ लीडर्स, डिजिटल मीडिया कार्यक्रम	13–15
5.	क्षमता विकास और नेटवर्किंग	15–18
6.	संस्थागत कार्य	18–19
7.	कोविड–19 राहत कार्य	19–21
8.	कार्यक्रम का परिणाम	21–22
9.	चुनौतियां	22–24
10.	सीख	24–25
11.	सहयोगी संस्था	25
12.	सोशल मीडिया लिंक	26

1. संस्था का परिचयः

सद्भावना ट्रस्ट की स्थापना 1990 मे दिल्ली में स्थानीय सक्रिय कार्यकर्ताओं के एक ऐसे समूह द्वारा की गई जो जेण्डर एवं समता के सिद्धान्तों पर विश्वास करते हैं। और इस संस्था के पंजीकरण के 20 साल पहले से वे दिल्ली मे ग़रीब ग्रामीण मज़दूरों के साथ काम कर रहे थे। सद्भावना ट्रस्ट का उद्देश्य हैं स्थानीय नेतृत्व एवं क्षमताओं का विकास करना, खास तौर पर महिलाओं एवं हाशिये पर खड़े समूहों का।

सद्भावना ट्रस्ट 2009 से लखनऊ शहर की बस्तियों में हाशिये पर खड़े समुदाय के साथ काम कर रही हैं। संस्था लखनऊ में खासकर लड़कियों और महिलाओं के साथ जेण्डर हिंसा और पहचान के विषयों पर नज़रिया निर्माण करके उन्हें नेतृत्व में लाने का काम करती हैं। साथ ही लड़कियों और महिलाओं को तकनीकि कौशल का हुनर देते हुये उन्हे सशक्तीकरण एवं आत्मनिर्भर बनने पर ज़ोर देती है। इसी कड़ी में संस्था समुदाय में महिला हिंसा के मुद्दे पर कानूनी पैरवी एवं महिलाओं को पुनः स्थापित करने का काम करती हैं। जिससे महिलाओं की सामाजिक कामों में भागीदारी सुनिश्चित हो और वे अपने अधिकारों की अगुवाई खुद करे।

संस्था का विज़न

एक ऐसे हिंसा मुक्त सामाज का निर्माण करना, जो समानता, शांति, भेदभाव से मुक्त, लैंगिक हिंसा से मुक्त और न्याय पर आधारित हो, जहां पर सभी इंसान को सामान्य अवसर प्राप्त हो।

संस्था का मिशन

हाशिये पर खड़े समुदाय की लड़कियों एवं महिलाओं का नज़रिया निर्माण करते हुए उन्हे नेतृत्व में लाना। और तकनीकी कौशल का हुनर देकर उन्हे सशक्त करते हुए आत्मनिर्भर बनाना एवं रचनात्मक तरीके से अपने समुदाय के मुद्दों पर आवाज़ उठाने की प्रक्रिया से जोड़ना।

2. एक साल के काम की मुख्य उपलब्धियां:

- कोविड के दूसरे लहर में संस्था ने पिछले साल की सीख से ज़रूरतमंद परिवारों को कोरोना के भीषण काल में, उनके मुख्य और तत्कालीन ज़रूरतों को सम्बोधित करते हुये राहत देने का काम किया। गम्भीर सकंट के समय कार्य करने की क्षमता तैयार कर पाना संस्था के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि हैं। क्योंकि संस्था का मुख्य काम समुदाय का नेतृत्व विकास करने का हैं।
- संस्था द्वारा कोविड–19 से उभरे मुद्दों पर सफलतापूवर्क अभियान आयोजित हुआ हैं।
- संस्था के कार्यक्रम का विस्तार दो नये क्षेत्रों में किया गया, वर्तमान में संस्था द्वारा लगभग 65 बस्तियों में किशोरियों और महिलाओं के साथ काम चल रहा है।
- नेतृत्व विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस साल 115 लड़कियों ने पूर्ण रूप से सहभागिता की। जिसके तहत उन्होंने तकनीकी जानकारी, सामाजिक मुद्दों पर समझ, डिजिटल सोशल मीडिया और समुदाय में काम करने के व्यवहारिक ज्ञान हासिल किये।
- सद्भावना ट्रस्ट के यूट्यूब चैलन पर एक हज़ार से ज़्यादा सब्सक्राबर्स की बढ़ोत्तरी हुई हैं।
- 20 लड़कियां नौकरी की दुनिया से जुड़कर अपने परिवार को चलाने में सहयोग कर रही हैं।
- 10 संघर्षशील महिलाएं आत्मनिर्भर हुई हैं, वर्तमान में वह अपने बच्चें और खुद का जीवन यापन स्वतंत्र रूप से कर रही हैं।
- संस्था द्वारा जो भी कर्यक्रम बड़े लेवल पर हो रहा है, उन सभी कार्यक्रमों की झलक स्थानिय न्यूज़ पेपर और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में छपना एक बड़ी उपलब्धि है।
- महिला कार्यक्रम के तहत महिलाओं के साथ काम करने का दायरा बढ़ा हैं और उनकी ज़रूरत के हिसाब से नये कार्यक्रम तैयार किये गये हैं।

3. समुदाय आधारित मुख्य गतिविधियां:

युवा महिला एवं किशोरी कार्यक्रम–

लड़कियों का मोहल्ला मंच– नेतृत्व विकास कार्यक्रम का संचालन (लड़कियों के साथ) मोहल्ला मंच के माध्यम से नियमित रूप से चल रहा हैं। यह कार्य पूर्ण रूप से 7 क्लस्टर में चल रहा हैं। मोहल्ला मंच में संचालित की गई गतिविधियों का विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।

- नियमित रूप से 65 बस्तियों में किशोरियों के साथ ऑनलाइन–ऑफलाइन (माह में दो बार) नज़रिया निर्माण (कोविड के संदर्भ में जेण्डर, भूमिका, गैरबराबरी, शिक्षा, भेदभाव, गतिशीलता, प्रजनन स्वास्थ्य, और हिंसा) सत्रों का आयोजन किया गया हैं। संचालित सत्रों में मंच से लगभग 700 किशोरियां जुड़ी हुई हैं।
- 'डिजिटल दुनिया में हम महिलाएं' सीरीज पर प्रत्येक किशोरी मंच में पोस्टर के माध्यम से चर्चा करके, डिजिटल दुनिया में महिलाओं की पहचान और काम पर किशोरियों की समझ बनाई गई।
- प्रत्येक क्षेत्र के किशोरी मंच में 21 साल में शादी के मुद्दे पर समूह चर्चा कराया गया। जिसमें लगभग 460 किशोरियों ने भाग लिया। और उन्होंने शादी की सही उम्र पर समझ बनाई।
- किशोरी मंच से जुड़ी लगभग 75 लड़कियों के साथ तीन क्षेत्र में 15 दिवसीय नेतृत्व विकास प्रशिक्षण (बुलंद इरादे कार्यक्रम) का संचालन किया गया। जिसके तहत लड़कियों ने कंप्यूटर कौशल, फोटोग्राफी, सोशल मीडिया और सामाजिक मुद्दों पर सीख हासिल की।
- प्रत्येक मोहल्ला मंच की लगभग 125 लड़कियों के साथ कोविड की दूसरी लहर के प्रभाव और कोविड टीका की आवश्यकता के मुद्दे पर डॉक्टर के साथ ऑनलाइन चर्चा आयोजित की गई। सत्र के ज़रिये लड़कियां कोविड टीका के महत्व को समझ पाईं।

- 'पन्नो से झलकते अधिकार' कार्टून प्रतियोगिता में प्रत्येक मंच में से लगभग 350 लड़कियों ने सहभागिता किया। इनमें से तीन लड़कियां प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में विजेता बनी।
- प्रत्येक 7 क्षेत्रों से चिन्हित ऐसी 25 लड़कियां जिनकी पढ़ाई महज़ तकनीकी संसाधन न होने की वजह से छूट गई थी। उन 25 लड़कियों के साथ तीन महीने का डिजिटल एक्सेस फैलोशिप प्रोग्राम चलाया गया। जिसमें लड़कियों ने डिजिटल कौशल सीखा और अपने मोहल्लें में अपने सीखे अनुभव

का प्रर्दशन किया। कोर्स के उपरान्त लड़कियों को तकनीकी संसाधन के रूप में स्मार्ट फोन और 6 माह का इंटरनेट सुविधा दिया गया।

- किशोरियों द्वारा कोरोना नियमों का पालन करते हुये, 65 बस्तियों में लगभग 500 किशोरियों के साथ मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक हिंसा के मुद्दे पर 16 दिवसीय अभियान **तोड़ी बंदिशेः** "हिंसा के खिलाफ हमारी आवाज़" (महिला हिंसा का मानसिक स्वास्थ्य पर असर) आयोजित किया गया। जिसमें लड़कियों ने स्वयं द्वारा बनाये गये सच्ची कहानियों पर अधारित पोस्टर, पॉडकास्ट, फोटो एस्से, मंडला आर्ट और लघु फिल्म दिखाकर चर्चा कर मानसिक हिंसा के मुद्दे को सम्बोधित किया।
- मानव अधिकार दिवस के मौके पर "हिंसा के खिलाफ हमारी आवाज़" नाम से ऑनलाइन चर्चा चलाया गया। जिसके तहत समुदाय की संघर्षशील महिलाओं और लड़कियों ने मानसिक हिंसा से जुड़े अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किया। साथ ही किशोरियों ने समुदाय के बीच 16 दिवसीय अभियान के आयोजन का अनुभव और कहानियां साझा किया।
- संस्था के कार्यक्रम से जुड़ी समुदाय की 20 लड़कियों ने अपने क्षेत्र में राहत कार्य करने हेतु सर्वे करके ज़रूरतमंद परिवार को राहत सामग्री पहुचाने का काम किया।
- प्रत्येक क्षेत्र (7 क्षेत्र) की 10 लड़कियों की टोली ने 65 बस्तियों में 2 महीने लगातार "टीकाकरण अभियान" चलाया। जिसके तहत उन्होंने स्वयं पोस्टर बना कर समुदाय के बीच चर्चा चलाया।

नेतृत्व विकास कार्यक्रम (जॉब स्किल्स कोर्स)– दो क्षेत्र (राधाग्राम और अकबरनगर) में नेतृत्व विकास कार्यक्रम (विकेन्द्रीकरण सामुदायिक केन्द्र) के तहत 30 लड़कियों को जॉब स्किल्स कोर्स से जोड़ा गया। कार्यक्रम के तहत लड़कियों ने ठोस रूप से निम्न कौशल (ऑनलाइन– ऑफलाइन सत्रों के माध्यम से) सीखे। जैसे– कंप्यूटर का बेसिक कोर्स, फोटोग्राफी, डिजिटल स्टोरी, व्हाट्सएप फॉरवर्ड, इंग्लिश कोर्स, जॉब मार्केट एक्पोजर विज़िट, करियर काउंसलिंग, व्यक्तित्व विकास, नये पीढ़ी के कौशल सोशल मीडिया, इंटरव्यू स्किल्स, नज़रिया आधारित सामाजिक मुद्दें पर जागरूकता, सी0वी0 लेखन, बैंक संबंधित जानकारी, डिजिटल लिटरेसी, कोविड–19 से उभरे मुद्दों पर मोहल्ला अभियान, 1 माह का इर्न्टनशिप प्रोग्राम और सामुदायिक कार्यक्रम का आयोजन।

- उपरोक्त 30 लड़कियों को 5 अलग– अलग संस्थाओं में जॉब एक्सपोजर विज़िट कराया गया। जिससे वह नौकरी के दौरान होने वाले कामों के प्रबंधन के बारे में समझ पायें।
- 30 लड़कियों के साथ मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर 10 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिससे वह स्वयं के स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे की पहचान कर पायें और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करने के तरीके सीख पायें।

- कोर्स के तहत 10 लड़कियों का चयन इर्न्टनशिप प्रोग्राम के लिए किया गया। जिसके ज़रिए लड़कियों को उनकी जॉब रूचि के हिसाब से एक महीने अन्य संस्थाओं में स्वशिक्षण करने का मौका मिला।

- 10 लड़कियों ने घटते रोज़गार के मुद्दे पर 100 परिवार का सर्वे किया। जिससे यह समझा कि मज़दूर परिवार कोरोना काल में कैसे अपने परिवार का जीवन–यापन कर रहा हैं। साथ ही यह भी समझने की कोशिश किया कि परिवार को चलाने में महिलाओं और लड़कियों की क्या भूमिका रही हैं।
- जॉब स्किल्स कोर्स से जुड़ी 10 लड़कियों ने युवा मेला की तैयारी में भाग लिया। और कोर्स समापन कार्यक्रम को रचनात्मक बनाने के लिए रूचिकर खेल और नाटक प्रस्तुत किया।
- नया कार्यक्रम आरम्भ करने हेतु क्षेत्र राधाग्राम में सेन्टर की खोज की गई। और कार्यक्रम में शामिल होने हेतु 25 लड़कियों का पंजीकरण करके उनके साथ कार्यक्रम शुरू किया गया।
- कार्यक्रम से जुड़ी पुरानी 20 लड़कियों के (एलुमनाई ग्रुप की लड़कियां) साथ 2 माह के लिए इंग्लिश क्लास और 8 हफ्ते का इमेज मैनेजमेंट की क्लासेस संचालित की गई।
- एलुमनाई ग्रुप की दो लड़कियों को राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम '**लीडर्स लैब**' में 4 माह के कार्यक्रम में भाग लेने का मौका मिला।

बेखौफ़ नज़रे (एडवांस लीडरशिप प्रोग्राम)–एडवांस नेतृत्व विकास कार्यक्रम के तहत 15 लड़कियों के साथ एक वर्ष का प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। जिसके तहत लड़कियों के साथ ऑनलाइन–ऑफलाइन कई कार्यशालांए चलाई गईं। जैसे–कोविड–19 के सन्दर्भ को समझना, जेण्डर– भेदभाव, लिंग आधारित हिंसा, कानून, बड़े पैमाने पर हो रही हिंसा, अभिव्यक्ति के तरीके, सोशल मीडिया की खूबियां और खामियां, महिला आन्दोलन का इतिहास, ऐतिहासिक इमारतों की शैक्षिक जानकारी, आरक्षण और समता–समानता, मौजूदा सन्दर्भ में प्रस्तावित कानून पर समझ, अभिलेखन, महिला हिंसा कानून और निजी कानून पर समझ, मानसिक स्वास्थ्य एवं उपाय, जेण्डर पहचान और यौनिकता, वीडियोग्राफी कार्यशाला, समुदाय में सत्र संचालन हेतु प्रतिमाह इनपुट कार्यशाला, कोविड–19 के दौरान उभरे मुद्दे पर विचार विमर्श एवं समुदाय के बीच अभियान का संचालन करना।

- कार्यक्रम के उपरान्त लड़कियों द्वारा कार्यक्रम का एण्ड लाइन सर्वे किया गया। और उनके साथ फीडबैक सत्र चलाया गया। जिसके तहत लड़कियों ने टॉक शो के माध्यम से अपने अनुभव को सबके बीच साझा किया।

- एडवांस कोर्स के उपरान्त उन्ही 15 लड़कियों के साथ 10 दिवसीय टी.ओ.टी. कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें लड़कियों को सत्र चलाने और पाठ्यक्रम बनाने के तरीके सीखायें गये। पाठ्यक्रम को (कंप्यूटर, सोशल मीडिया और नज़रिया निमार्ण) समुदाय में कियान्वित करने हेतु तीन क्षेत्रों में 15 दिवसीय नेतृत्व विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण को इन्ही लड़कियों द्वारा स्वतंत्र रूप से चलाया गया।
- शिक्षा की मौजूदा स्थिति को समझने हेतु 5 क्षेत्रों में समुदाय नेत्रियों द्वारा 500 परिवार का सर्वे किया गया।
- अक्टूबर 2021 से एडवांस कोर्स का नया बैच शुरू हो गया हैं, यह प्रोग्राम दो साल का हैं। इस कोर्स के तहत 15 लड़कियां जुड़ी हैं, वे 15 दिन का समय कार्यक्रम को देती हैं। जिसमें वह 10 दिन में कार्यशालांए ग्रहण करती हैं और पांच दिन का समुदाय कार्य करती हैं। इन लड़कियों के साथ कम्प्यूटर कार्यशाला, लिंग आधारित भेद– भाव, स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य, महिला हिंसा, सामाजिक मुद्दे पर फिल्म मॉड्यूल, ऐतिहासिक इमारतों का इतिहास, लखनऊ हस्तशिल्प बाज़ार का एक्पोजर विज़िट, सोशल मीडिया और समुदाय में कार्य करने के व्यवहारिक ज्ञान पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया हैं।

प्रमाण पत्र वितरण समारोह– सद्भावना ट्रस्ट ने कोरोना महामारी की स्थिति को देखते हुये "**नेतृत्व विकास कार्यक्रम**" (जॉब कोर्स, बेसिक कोर्स, एडवांस कोर्स और डिजिटल ऐक्सेस फैलोशिप प्रोग्राम) का प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन छः क्षेत्रों में किया। कोविड–19 नियमों का पालन करते हुये यह कार्यक्रम सीमित लोगों के बीच किया गया। कार्यक्रम से जुड़ी लड़कियों द्वारा नाटक, कविता, फोटो प्रर्दशनी, नौकरी हेतु सीवी प्रर्दशनी, शॉट फिल्म, डांस, मनोरंजक खेल, और पैनल डिस्कशन किया गया। जिसके तहत उन्होंने कार्यक्रम से जुड़े अपने सीखे अनुभव को सबके बीच साझा किया।

GBV एवं महिला कार्यक्रम–

GBV केस पैरवी– संस्था द्वारा महिला हिंसा के लगभग 54 केसों में महिलाओं के निणर्य अनुसार पैरवी की गई है। जैसे– काउन्सलिंग करना, मनोबल बढ़ाना, स्वास्थ्य सुविधा में सहयोग, इकरारनामा करना, प्रशासन द्वारा सहयोग दिलाना, एफ0आई0आर0,(इनमें 22 कोर्ट केस हैं) लॉकडाउन के दूसरे और तीसरे लहर के दौरान महिलाओं से संपर्क बनाये रखते हुए उनको सूखा राशन, हेल्थ किट और हाईजीन किट का लाभ देना। साथ ही संघर्षशील महिलाओं को रोज़गार और उनके बच्चों की शिक्षा में सहयोग दिया गया। 20 स्थानिय कोर्ट केसों में लगातार पैरवी की गयी हैं।

उपरोक्त कोर्ट केस में दो युवा महिलाओं का केस अन्य ज़िले का हैं जिसका संक्षेप विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।

बिटिया केस 1–कोरोना महामारी की वजह से महिला का केस लंबित है। संस्था द्वारा युवा महिला को उसकी पढ़ाई में सहयोग किया गया हैं। वर्तमान में महिला बी.एस.सी की पढ़ाई पूरी कर चुकी हैं, आगे वह पढ़ाई नही करना चाहती हैं। अभी वह घर की ज़िम्मेदारी ले रही हैं।

बिटिया केस 2– वर्तमान में युवा महिला भोपाल के मानसरोवर नर्सिंग कॉलेज से नर्सिंग का कोर्स पूरा कर चुकी है। अब वह स्वयं हॉस्पिटल में नर्स की नौकरी कर रही हैं, वह अब खुद आत्मनिर्भर हो गई हैं। और अपना जीवन–यापन स्वतंत्र रूप से कर रही हैं। संस्था द्वारा महिला के केस में कानूनी पैरवी के लिए सहयोग किया जा रहा हैं। बिटिया के पिता अभी भी जेल में हैं, वकील के ज़रिये जेल अपील पड़ने की निगरानी की जा रही हैं।

नियमित रूप से किये गये कार्यों का विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।

- 30 संघर्षशील महिलाओं के साथ प्रतिमाह नज़रिया निमार्ण हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसके तहत महिलाओं का सामाजिक मुद्दों पर नज़रिया बना।
- कार्य क्षेत्र की औरतों के साथ रोज़गार की स्थिति पर चर्चा करके 50 महिलाओं को रोज़गार में सहयोग किया गया।

- दो लड़कियों को (कोविड–19 के दौरान हुई शादी) गम्भीर स्थिति में ससुराल से निकाल कर मायके पक्ष को सुपुर्द कर ससुराल पक्ष के खिलाफ मुक़दमा दर्ज कराया गया। और उन दोनों युवा महिलाओं को नेतृत्व विकास कार्यक्रम से जोड़ा गया।
- पिछले एक साल में 8 केसों में सफलता मिली हैं।
- स्थानिय वकील और लीगल सलाहकार के साथ प्रतिमाह नियमित रूप से बैठक करके कोर्ट केस का ब्यौरा लेते हुये केसों में आगे की रणनीति बनाई गई।
- कानूनी परामर्शदाता द्वारा महिला कार्यक्रम टीम के साथ हर दूसरे महीने कानून से जुड़ी जानकारी का सत्र चलाया गया। जिससे कार्यकताओं को महिला हिंसा के केसों में कानूनी जानकारी का अभाव न हो और वह स्वतंत्र रूप से केसों में पैरवी कर सके।

महिला संगठन निर्माण–संस्था द्वारा 7 क्षेत्रों में महिलाओं का 20 संगठन तैयार किया गया हैं। जिसमें लगभग 500 महिलाएं जुड़ गई हैं। संगठन के माध्यम से महिलाओं के साथ प्रति माह नज़रिया निर्माण और जानकारी से जुड़ा सामाजिक मुद्दों पर सत्र का संचालन किया गया। जैसे जेण्डर, रोज़गार, हिंसा, शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, कोरोना टीकाकरण, पितृसत्ता, काम का बटवारा, महिला स्वास्थ्य और कानून व मौलिक अधिकार।

संगठन की महिलाओं के साथ नियमित रूप से चलाई गई गतिविधियों का विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।

- संगठन से जुड़ी 30 नेतृत्वकारी महिलाओं के साथ तीन दिवसीय महिला सशक्तिकरण और संगठन निर्माण की कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें महिलाओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया, और अपने संगठन को मज़बूत बनाने के तरीक़े सीखे।

- 16 दिवसीय अभियान के तहत महिलाओं के सभी 20 मंचों में मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक हिंसा से जुड़े मुद्दे पर सत्रों का संचालन किया गया। सत्र के दौरान महिलाओं ने मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक हिंसा से जुड़े कई पहलुओं की पहचान की। अभियान के उपरान्त महिलाओं द्वारा शासन और प्रशासन में ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन के ज़रिये महिलाओं ने अपने लिए सुरक्षित माहौल और मानवधिकार प्राप्ति की मांग की।
- संगठन की महिलाओं के बीच लगातार कोरोना टीकाकरण की जानकारी का काम अभी भी चल रहा हैं।

- डिजिटल स्पेस में महिलाएं सीरीज़ के तहत महिला संगठन की महिलाओं के साथ डिजिटल कौशल और काम की दुनिया में डिजिटल स्पेस में पहचान के मुद्दे पर चर्चा किया गया।
- संगठन की नेतृत्वकारी महिलाओं द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओं के मुद्दे पर 8 क्षेत्रों में अभियान संचालित किया गया। इस अभियान को स्वयं नेतृत्वकारी महिलाओं ने आयोजित किया और उन्होंने सत्र चलाने की ज़िम्मेदारी ली।
- मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं के साथ जूम वेबिनार के ज़रिये मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक हिंसा के मुद्दें पर चर्चा चलाया गया। इस चर्चा में हर संगठन से लगभग 250 महिलाएं जुड़ी और चर्चा में अपनी प्रतिक्रिया दी।

सूचना डेस्क–महिला संगठन की महिलाओं के बीच सूचना डेस्क का आयोजन किया गया, जिसमें वर्तमान संचालित सरकारी योजनाओं एवं कानूनी दस्तावेज़ बनाने की जानकारी दी गई। सूचना डेस्क के ज़रिये संगठन की 12 महिलाओं का ई–श्रम कार्ड निःशुल्क बनवाये गये, जिसमें 200 रू0 प्रति व्यक्ति फॉर्म भरवाने का पैसा लिया जा रहा था, परन्तु संस्था द्वारा बात करने पर कार्ड निशुल्क बना। 4 महिलाओं का लेबर कार्ड बनवाया गया।

प्रशासनिक सम्पर्क– स्थानीय और ज़िले स्तर पर जैसे– डी.एम, एस.पी, सी.ओ, एस.ओ के साथ महिलाओं का संपर्क कराया गया। साथ ही महिलाओं द्वारा सुरक्षा और अपनी बुनियादी ज़रूरतों को लेकर सरकारी विभागों में ज्ञापन दिया गया। जैसे– डूडा कार्यालय, 8 क्षेत्र के थाने, डी.एम और स्थानीय स्टेक होल्डर।

समुदाय के बीच अभियान कार्यक्रम–

पिछले एक साल में संस्था द्वारा कोविड–19 के दौरान उभरे विशेष मुद्दों पर समुदाय के (लड़कियों और महिलाओं के साथ) बीच कई प्रकार के ऑनलाइन– ऑफलाइन कार्यक्रम आयोजित किये हैं, जिसका संक्षेप में विवरण नीचे दिया गया हैं।

तोड़ी बंदिशेंः महिला हिंसा का मानसिक स्वास्थ्य पर असर– प्रत्येक क्षेत्र की चिन्हित किशोरियों और महिला मंच की महिलाओं ने सद्भावना ट्रस्ट के सहयोग से 16 दिवसीय अभियान आयोजित किया। यह कार्यक्रम क्षेत्र डालीगंज, अकबरनगर, राधाग्राम, गढ़ीकनौरा, जनतानगरी, कैम्पल रोड, बरौरा, खदरा और नौबस्ता में किया गया। मानसिक हिंसा और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर महिलाओं और किशोरियों ने पोस्टर, पॉडकास्ट और मंडला आर्ट

गतिविधियों के ज़रिये चर्चा चलाया। अभियान के अन्त में महिलाओं ने महिला सुरक्षा हेतु एक मांग पत्र तैयार करके मुद्दे से जुड़े विभागों के अधिकारियों को दिया। अभियान कार्यक्रम का समापन करने हेतु संस्था द्वारा मानव अधिकार दिवस के अवसर पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में लगभग 350 महिलाएं और लड़कियां जुड़ी और ऑनलाइन मंच पर उन्होंने अपने अनुभव साझा किया।

कोरोना टीकाकरण अभियान– प्रत्येक 5 क्षेत्र की चिन्हित 10 लड़कियों की टोली के साथ कोरोना टीकाकरण के मुद्दे पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उपरान्त उन 10 लड़कियों को दो माह के लिए प्रत्येक क्षेत्र में कोरोना टीकाकरण जानकारी हेतु सत्र संचालित करने की जिम्मेदारी दी गई। अभियान के ज़रिये लड़कियों ने 50 बस्तियों में 2 महीने लगातार "टीकाकरण अभियान" चलाया। जिसके तहत उन्होंने स्वयं पोस्टर बना कर समुदाय के बीच चर्चा चला कर कोरोना टीकाकरण की पूर्ण जानकारी दी और समुदाय को टीकाकरण करने हेतु प्रोत्साहित किया।

तोड़ी बंदिशेंः सेहत हमारी तुम्हारी (औरतों के हक़, दर्द और एहसास)– समुदाय की महिला नेत्रियों द्वारा 8 क्षेत्रों में (कैम्पल रोड, खदरा, बरौरा, जनतानगरी, राधाग्राम, डालीगंज, गढ़ीकनौरा, अकबर नगर) **"खेल–खेल में नज़रिया बदलो"** कार्यक्रम का आयोजन कर, महिलाओं के साथ कोविड–19 में उभरे सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर, चर्चा करके उनकी समझ बनाने का काम किया गया। अभियान के तहत महिलाओं ने अपने–अपने क्षेत्र की अन्य युवा महिलाओं को स्वास्थ्य से जुड़ी बुनियादी सुविधाओं की जानकारी दी। साथ ही उन्हें स्वयं के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की देख–रेख करने के रास्ते बतायें।

- अभियान के दौरान जन सुविधाओं को लेकर समुदाय के स्टेक होल्डर्स से इंटरव्यु लिया गया और उनका वीडियो डॉक्युमेंट तैयार किया गया।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी को ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया।

महिला दिवस कार्यक्रम– सद्भावना ट्रस्ट ने समुदाय की युवा महिलाओं के साथ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह एवं **तोड़ी बंदिशेंः सेहत हमारी तुम्हारी** (औरतों के हक़, दर्द और एहसास) अभियान का समापन कार्यक्रम का आयोजन किया। कोविड –19 महामारी नियमों का पालन करते हुये कार्यक्रम में समुदाय से लगभग 150 महिलाओं को आमंत्रित किया गया।

महिला दिवस के अवसर पर समुदाय की युवा महिला द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया। महिला नेत्रियों द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर पैनल डिस्कशन किया गया। किशोरियों द्वारा फिल्माई गई स्वास्थ्य के मुद्दे पर लघु फिल्म '**सेहत हमारी–तुम्हारी**' का प्रर्दशन किया गया। किशोरियों द्वारा मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर पैनल चर्चा चलाया गया, जिसके तहत उन्होंने कोविड संकट काल में उभरे मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर अपना अनुभव साझा किया। युवा महिलाओं द्वारा डिजिटल हुनर का प्रर्दशन करते हुये फोटो गैलरी सजाई गई, 'खेल–खेल में नज़रिया बदलो' नाम से एक रचनात्मक कोना बनाया गया जिसमें स्वास्थ्य से जुड़े रूचिकर खेल खिलवाया गया, जिसके ज़रिये महिला स्वास्थ्य से जुड़े अलग–2 पहलूओं पर गहरी चर्चा करके महिलाओं की जानकारी बढ़ाई गई। कार्यक्रम के दौरान अतिथि द्वारा 'साड़ी' नाम से सम्बोधित कविता पढ़कर महिलाओं को प्रोत्साहित किया गया। महिला स्वास्थ्य विशेषज्ञ द्वारा बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर जानकारी दी गई।

4. लखनऊ लीडर्स, डिजिटल मीडिया प्रोग्रामः

"लखनऊ लीडर्स" एक सोशल मीडिया पहल हैं जिसकी शुरूवात सद्भावना ट्रस्ट ने पिछले साल लॉकडाउन के दौरान किया था। "लखनऊ लीडर्स" समुदाय से उभरी युवा नेत्रियों का समूह हैं जो सद्भावना ट्रस्ट के लीडरशिप बिल्डिंग प्रोग्राम से उभर कर आईं हैं, सोशल मीडिया कार्यक्रम इन्ही लड़कियों के नेतृत्व में चल रहा हैं। कोरोना काल के दूसरी लहर में भी इन्ही नेत्रियों द्वारा जानकारी से जुड़े "कोविड का दूसरा दौर" नाम से ऑनलाइन– ऑफलाइन अभियान चलाया गया। इसके अतिरिक्त "लखनऊ लीडर्स" द्वारा किये जा रहे पहल का विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।

कोविड का दूसरा दौर– लखनऊ लीडर्स द्वारा इस साल दूसरा अभियान 'कोविड का दूसरा दौर' के नाम से शुरू किया गया, जिसकी शुरूआत "मैं महसूस कर रही हूं" सीरीज के साथ हुई। इस थीम को लोगों के बीच लाने का ख़ास मकसद था कि लोग लॉकडाउन के समय क्या महसूस कर रहे हैं? उससे उनकी ज़िदंगी पर क्या असर पड़ रहा हैं? लॉकडाउन के दौरान स्थिति बहुत खराब थी जिसमें लोग उलझन, घुटन, आर्थिक

रूप से कमज़ोर, हताशा और निराशा महसूस कर रहे थे। सीरीज के तहत पोस्टर, वीडियो, ऑडियो और कार्टून चित्रों के माध्यम से समुदाय में जिस तरह का जीवन लोग व्यतीत कर रहे थे उनकी आपबीती और कोविड–19 व सरकारी योजनाओं से जुड़ी जानकारी सोशल मीडिया के ज़रिये लोगों के बीच साझा किया गया।

कार्टून पोस्टर मेकिंग– कम्यूनिटी लीडर्स द्वारा कार्टून के ज़रिए कोरोना महामारी से जुड़ी महत्वपूर्ण और सही जानकारी के पोस्ट बनाकर सोशल साइट पर अपडेट किया गया।

कहां गई आमदनी– कहां गई आमदनी? थीम के ज़रिए कोविड–19 के दूसरे लहर से हुए प्रभावित उन तमाम किस्म के रोज़गार का रिसर्च कम्युनिटी लीडर्स द्वारा किया गया। जिस रोज़गार को ख़ासकर गरीब परिवार अपनी आजीविका का मुख्य साधन मानते है। जैसे– फुटपाथ रोज़गार, महिला रोज़गार और विकलांग व्यक्ति, आदि रोज़गार से जुड़े 10 पोस्टर और 5 वीडियो संस्था के सभी सोशल प्लेटफॉर्म पर पोस्ट किया गया।

मोहल्ला–ए– रूबरू– कोविड–19 के दूसरी लहर में घर में सब कैद हो गये थे, ऐसे में प्रत्येक मोहल्लों की मौजूदा स्थिति से रूबरू होना बहुत ही मुश्किल हो गया था। इसलिए उन्ही मोहल्लों से लड़कियों का चयन कर उन्हें जूम पर ट्रेनिंग देकर उनसे उनके मोहल्ले के बारे में फोटो क्लिक करने को कहा गया। यह काम उन्होने बखूबी किया और उनके ज़रिये मोहल्ले की स्थिति फोटो के रूप में सबके सामने आई।

डिजिटल स्पेस में महिलाएं (अनकही कहानियां, जद्दोजहद और वजूद)– इस कार्यक्रम के तहत लखनऊ लीडर्स ने 12 युवा महिलाओं का इंटरव्यू किया जो अलग–अलग तरह के रोज़गार से जुड़ी हैं। जैसे–'मेरी ज़िन्दगी' महिला बैंड, क्राफ्ट बिजनेस वीमेन, महिला पत्रकार, कलाकार, वीडियो डायरेक्टर, सिनेमेटोग्राफर, स्टेज प्रोग्राम एंकर, ग्रामोफ़ोन की ऑनर, स्ट्रीट परफॉर्मर और साइंटिस्ट रिसर्चर। यह ऐसी महिलाएं है जो ख़ासकर 'डिजिटल स्पेस' का उपयोग अपने काम के लिए कर रही हैं। इन्हें अपने काम के दौरान डिजिटल प्लेटफार्म पर एक महिला होने के नाते कास्ट, क्लास और प्रीविलेज को लेकर लिंग आधारित भेदभाव का अनुभव करना पड़ा है। इनके अनुभव को डॉक्युमेंट्री फिल्म के माध्यम से संजोया गया हैं। कार्यक्रम के तहत 5 फिल्में बनाई गई हैं। यह फिल्में सद्भावना ट्रस्ट के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मौजूद हैं। फिल्म का

प्रदर्शन ऑनलाइन– ऑफलाइन दोनों तरीकों से किया गया। कार्यक्रम में लगभग 1020 युवा महिलांए और लड़कियां शामिल हुईं।

मुद्दे आधारित अभियान– लखनऊ लीडर्स द्वारा ऑनलाइन कई अभियान चलाये गये, जैसे– 16 दिवसीय अभियान, तोड़ी बंदिशें: सेहत हमारी' तुम्हारी 8 दिवसीय अभियान, महिला दिवस समारोह, डिजिटल स्पेस में महिलाएं, कोविड के दूसरी लहर में महिला और टेक्नोलॉजी। साथ ही साथ इन्ही मुद्दों पर युवा महिलाओं के साथ जूम इवेन्ट भी किये गये।

समुदाय आधारित डिजिटल प्रतियोगिता– समुदाय की युवा महिलाओं और लड़कियों से नियमित रूप से जुड़ाव बनाएं रखने और लखनऊ लीडर्स की पहचान बनाने हेतु इस साल दो (कार्टून प्रतियोगिता 'पन्नो से झलकते अधिकार' और महिलाओं के छुपे हुनर) प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता ख़ासकर युवा महिलओं और लड़कियों के लिए आयोजित किया गया, ताकि वह अपनी छुपी प्रतिभाओं को सबके बीच साझा कर सके।

साथी संस्थाओं के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम– पिछले एक साल में लखनऊ लीडर्स टीम ने दो साथी संस्थाओं (किया और प्वाइंट ऑफ व्यू) में ज़मीनी स्तर पर काम करने वाली कार्यकताओं को डिजिटल सोशल मीडिया कैम्पियन की ट्रेनिंग दिया हैं। साथ ही समुदाय में किशोरियों और महिलाओं के साथ डिजिटल सोशल मीडिया कार्यक्रम चलाया हैं। ट्रेनिंग संचालित करने में टीम का आत्मविश्वास बढ़ा और नये लोगों से जुड़ाव बना।

आउटरिच/पहुंच– लखनऊ लीडर्स द्वारा चलाये जा रहे डिजिटल कार्यक्रम के तहत सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पहले की अपेक्षा लोगों की पहुंच बढ़ी हैं। उदाहरण के तौर पर– **1)** यूटयूब चैनल पर– **1.07** सब्सक्राइबर्स **2)** फेसबुक पेज पर– **993** लाइकर्स **3)** इंस्टाग्राम पर– **518** फॉलोवर्स। **4)** ट्वीटर पर– **53** फॉलोवर्स।

5. क्षमता विकास एवं नेटवर्किंग:

- कोविड–19 के सन्दर्भ में हिंसा और गैरबराबरी के मुद्दे को समझने हेतु बाहरी सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संस्था के सारे कार्यकर्ता शामिल हुये।

- कोविड–19 के सन्दर्भ में स्वास्थ्य के मुद्दे पर समझ बनाने और मुद्दे की पैरवी करने के तरीके पर सहयोगी संस्था द्वारा आयोजित कार्यशाला में संस्था के कार्यकर्ता शामिल हुये।
- संस्था द्वारा मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर कार्यकर्ताओं के साथ दो दिवसीय कार्यशाला कराई गई।
- कार्यकर्ताओं का सम्प्रेष्ण क्षमता और टाइम मैनेजमेंट क्षमता को बढ़ाने के लिए 10 दिवसीय कार्यशाला कराई गई।
- संस्था के सभी सदस्यों के साथ दो दिवसीय सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा, मौजूदा सन्दर्भ में गैरबराबरी और महिलाओं के संघर्ष के इतिहास पर चर्चा किया गया।
- महिला मुद्दों पर संगठित नेटवर्क समूह के साथ होने वाली बैठक और कार्यशाला में नियमित रूप से संस्था के कार्यकर्ता जुड़े रहें हैं।
- संवदा संस्था द्वारा संचालित (युवा नेतृत्व विकास कार्यक्रम) कार्यक्रम में हमारी संस्था के एक साथी को 6 महीने तक कार्यक्रम से जुड़ने का मौका मिला।
- संस्था के कार्यकर्ता के साथ वर्तमान में पास हुये राईट टू च्वाइस कानून और विशेष विवाह अधिनियम कानून पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- यूपी पुलिस हेड क्वाटर द्वारा आयोजित यौन उत्पीड़न कमेटी की बैठक में संस्था की वरिष्ठ कार्यकर्ता की भागीदारी रही।
- साथी संस्था की तरफ से करामत गर्ल्स कॉलेज की 20 लड़कियों द्वारा संस्था का विज़िट किया गया। और संस्था द्वारा उन लड़कियों के साथ महिला नेतृत्वकारी पहल के मुद्दे पर सत्र संचालित किया गया।
- नये कार्यकर्ताओं के साथ दो माह का इंग्लिश क्लास का आयोजन किया गया जिससे उन्हें रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अंग्रेज़ी पढ़ना और समझना आसान हो जाये।
- साथी संस्था द्वारा आयोजित 'हमारा पहला फोन' नाम की कार्यशाला में संस्था के 4 साथियों ने भागीदारी ली। जिसके तहत उनके पहले फोन के अनुभव पर कॉमिक बुक तैयार की गई।

- संस्था द्वारा जेंडर और यौनिकता के मुद्दे पर कार्यकताओं की जानकारी बढ़ाने हेतु 5 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के ज़रिये टीम को जेंडर के प्रकार, पहचान और चुनौतियों के बारे में जानकारी मिली।
- कार्यकर्ताओं के मानसिक स्वास्थ्य और

शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान मे रखते हुये संस्था द्वारा तीन माह का बॉडी मूवमेंट कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें टीम ने ये सीखा कि अपनी सेहत का कैसे ख्याल रखे और अपनी बॉडी को कैसे फिट रखा जाये।

- संस्था द्वारा मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। जिसके तहत टीम ने अपने मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करने हेतु कई तरीके सीखे।
- साथी संस्था द्वारा आयोजित कार्यशाला 'डिजिटल दुनिया और जेण्डर' के तहत साथियों ने समझा कि जिस तरह से हमारे लिए ऑफलाइन समाज है वैसा ही हमारा डिजिटल दुनिया है, जैसे हम पार्क में घूमते या मस्ती करते हैं तो हम यही सोचते हैं कि लोग क्या कहेंगे? वैसे ही अगर हम ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर फोटो या वीडियो शेयर करते हैं तो इस बात पर भी हम यही सोचते हैं कि लोग क्या कहेंगे? हमारे लिए दोनों डर एक जैसा ही है।

- संस्था द्वारा 'पब्लिक हेल्थ' के मुद्दे पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के तहत टीम ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के तहत मिलने वाली बुनियादी जन सुविधाओं के बारे जानकारी हासिल किया। और साथ ही उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर 8 क्षेत्रों में अभियान चलाया।
- साथी संस्था द्वारा दो दिवसीय 'नीतिगत, स्वास्थ्य बजट' कार्यशाला का आयोजित किया गया। कार्यशाला में संस्था से दो साथियों ने भागीदारी ली और उन्होंने स्वास्थ्य से जुड़ी नीतिगत चर्चा में अपने अनुभव प्रस्तुत किये।
- महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर कोविड के दूसरी लहर के असर को समझने हेतु साथी संस्था द्वारा आयोजित चर्चा में संस्था के 4 साथी शामिल हुये। चर्चा से यह समझ बनी कि किस तरह से कोविड और लॉकडाउन का महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर असर देखने को मिला है।
- संस्था द्वारा कोविड वैक्सीनेशन "टिका क्यों लगवाये" जूम वेबिनर का आयोजन किया गया। जिसके तहत ये समझने को मिला कि समुदाय में टिके को लेकर फैली भ्रांतियों को कैसे दूर किया जा सकता हैं और उन्हें टिका क्यों लगवाना ज़रूरी है।
- साथी संस्था द्वारा "कोविड इन हर वॉइस" नाम से जूम सेशन का आयोजन किया गया। चर्चा में संस्था के 4 कार्यकताओं ने भागीदारी ली। चर्चा के माध्यम से कार्यकर्ताओं को ग्रामीण इलाको की स्थिति को जानने का मौक़ा मिला।
- साथी संस्था द्वारा आयोजित 'गाना रीराईट प्रतियोगिता' में संस्था के दो साथियों ने भागीदारी ली। प्रतियोगिता के ज़रिये दोनों साथियों ने गाने के मुखड़े और अंतरे में बदलाव करके उसे रिकॉर्ड करके प्रतियोगिता में अपनी सहभागिता दी।
- साथी संस्था द्वारा किये गये 2 दिवसीय माइग्रेंट वर्कर जूम सेशन में संस्था से 4 साथियों ने भागीदारी ली। चर्चा में कई साथी संस्थाओं से लोग जुड़े, और उन्होंने मजदूरों की स्थिति को सबके

बीच साझा किया। साथ ही सबने मिलकर कामगार मजदूरों की स्थिति को बेहतर करने के लिए एक दूसरे को सुझाव दिये।

- संस्था द्वारा लखनऊ लीडर्स टीम के लिए निम्न प्रकार की कार्यशालाएं कराई गई। जैसे– फोटोग्राफी मॉड्यूल इनपुट, फोटोशॉप इनपुट, डिजिटल स्किल्स कार्यशाला, स्टोरी मेकिंग, कलर इफेक्ट इनपुट और कैनवा इनपुट।

6. संस्थागत कार्यः

ट्रस्ट बैठक (बोर्ड मीटिंग)– संस्था द्वारा नियमित रूप से साल में दो बार ट्रस्ट सदस्यों के साथ बैठक किया गया। प्रत्येक बैठक के दौरान ट्रस्ट सदस्यों को कार्यकर्ताओं द्वारा संस्था में चल रहे कामों का विस्तृत जानकारी से अवगत कराया गया। जैसे– संस्थागत उतार–चढ़ाव, वित्तीय प्रबंधन, कार्यकर्ताओं की क्षमता, कार्यक्रम का मूल्य, लीगल दस्तावेजीकरण, समुदाय की ज़रूरत और नये डोनर तक पहुंच बनाने की रणनीती।

यौन उत्पीड़न समिति बैठक– कार्य स्थल पर होने वाली यौन हिंसा अधिनियम 2013 के अंतर्गत कानूनी पैरवी करने हेतु, ऑनलाइन दो बार बैठक की गई। संस्था के अन्दर यौन उत्पीड़न से संबंधित कोई केस संज्ञान में नही आया हैं। संस्था द्वारा यौन उत्पीड़न समिति में एक नये व्यक्ति को समिति का सदस्य बनाया गया। क्योंकि समिति से जुड़े एक पुराने सदस्य ने अपने निजी कारण से समिति को छोड़ दिया। इस साल संस्था द्वारा संचालित सभी समुदाय कार्यक्रम में 'कार्यस्थल पर होने वाली हिंसा' का विषय जोड़ा गया हैं। साथ ही 'कार्यस्थल पर होने वाली हिंसा' के मुद्दे पर प्रत्येक क्षेत्र में अभियान चलाया गया। अभियान के उपरान्त समुदाय में "कार्य स्थल पर होने वाली यौन हिंसा" के मुद्दे पर महिलाओं एवं लड़कियों की जानकारी बढ़ी।

मासिक एवं साप्ताहिक बैठक– संस्था में नियमित रूप से मासिक बैठक और साप्ताहिक बैठक (ऑनलाइन–ऑफलाइन) संचालित हुआ हैं। साप्ताहिक बैठक में टीम अपने एक सप्ताह का काम और प्लान शेयर करते हैं। और मासिक बैठक में टीम पूरे माह का काम, सीख, अनुभव, चुनौती और अगले माह में होने वाले कार्यक्रम का प्लान और रणनीतियां प्रस्तुत करते हैं। साथ ही प्रति माह ट्रस्टी के साथ बैठक हुआ हैं, जो ख़ासकर प्रोग्राम और फाइनेंस मैनेजमेंट का सुपरविज़न और मेंटर करते हैं। साथ ही संस्था में कार्यकर्ताओं द्वारा एक कोर कमेटी स्थापित किया गया। जो पूर्ण रूप से संस्थागत स्तर, कार्यक्रम स्तर और समुदाय स्तर के कार्यक्रमों की निगरानी करते हैं। और मासिक बैठक में वे अपने ऑब्ज़रवेशन और सुझाव टीम के बीच प्रस्तुत करते हैं।

व्यक्तिगत रिव्यू– कोरोना महामारी के दूसरे और तीसरे लहर को ध्यान में रखते हुये सद्भावना टस्ट ने बाहरी सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा ऑनलाइन तरीके से कार्यकर्ताओं के साथ टीम लीडरशिप रिव्यू आयोजित किया। रिव्यू में संस्था के सभी कार्यकर्ता शामिल हुये। सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा किये गये रिव्यू प्रकिया से हमारे काम में पहले की अपेक्षा काम करने के तरीके में बदलाव देखने को मिला हैं। वर्तमान में प्रत्येक कार्यकर्ता अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। रिव्यू रिपोर्ट के आधार पर टस्टीज़ द्वारा टीम का मानदेय बढ़ाते हुये उन्हें नया पद और नई ज़िम्मेदारी दी गई।

संस्था द्वारा नये साथियों का चयन– संस्था द्वारा समुदाय कार्य और सामुदायिक केन्द्र हेतु 5 नये साथियों का चयन किया गया। 5 समुदाय नेत्रियों को फैलेाज़ के रूप में चिन्हित किया हैं, जो महीने का 15 दिन संस्था के समुदाय कार्य में कम्युनिटी ट्रेनर के रूप में काम कर रही हैं। साथ ही एक साथी का चयन फाइनेंस कॉडिनेटर के रूप किया गया हैं, जो दिल्ली ऑफिस से फाइनेंस से जुड़ा सारा मैनेजमेंट देखती हैं।

7. कोविड–19 का दूसरे लहर में संस्था द्वारा समुदाय में पहलः

कोविड महामारी का दूसरा लहर बहुत ही ख़तरनाक साबित हुआ हैं, इस गम्भीर महामारी से कोई भी अछूता नही रहा हैं। पिछले एक साल में ज़रूरतमंद और वंचित समुदायों ने स्वास्थ्य, रोज़गार और सुरक्षा के साथ–साथ अपने प्रियजनों को खोने के मामले में विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना किया हैं। इस बीच

कई कामगार युवा नवजवानों का रोज़गार छूट गया। मज़दूरी खत्म हो गई, लड़कियों का स्कूल छूट गया, महिलाओं और लड़कियों पर घरेलू काम का बोझ बढ़ गया। महिलाओं के साथ यौनिक हिंसा बढ़ गई, महिला का ज़ेवर और उनके घर का सामान बिक गया, इलाज के दौरान पति के मर जाने पर औरतों ने तमाम दिक्कतों का सामना किया, बीमारी में लिये गये कर्ज़ लौटाने का दबाव औरत पर आया, कर्ज़दारों द्वारा औरतों और लड़कियों का शोषण किया गया, औरतों और लड़कियों की गतिशीलता पूरी तरह से रूक गई, जिसके कारण वह घरेलू ज़िम्मेदारियों से दब गई जिसका सीधा असर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ा।

उपरोक्त परिस्थिति और समुदाय की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुये सद्भावना ट्रस्ट ने समुदाय के बीच कई तरह से राहत पहुंचाने का काम किया हैं। जिसका विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।

समुदाय में राहत कार्य करने का आधार–

- समुदाय से ऐसा वंचित परिवार जिसके घर में कोविड से मौत हुई हैं।
- कोरोना महामारी से जिनका परिवार ग्रस्त हैं।
- एकल महिला जिनका कमाई का ज़रिया बंद हैं, वह फिर से रोज़गार करना चाहती हैं।
- ऐसी महिलाएं जो घरेलू कामगार हैं, लेकिन मौजूदा समय में उनका काम बंद हैं।
- विकलांग व्यक्ति।
- संघर्षशील महिलाएं और उनके बच्चें जिनके केसों में संस्था पैरवी करती हैं।
- किशोरी मंच और महिला मंच से जुड़ी महिलाएं।
- किशोरियां जिनकी पढ़ाई बीच में रूक गई हैं।

राहत कार्य का विवरण–

- राहत कार्य हेतु समुदाय की 20 लड़कियों का चयन किया गया। जिससे वह अपने मोहल्लें के उभरे मुद्दे पर पैरवी कर सके।

- 20 लड़कियों को दो महीने के लिए मोहल्ले की स्थिति का विवरण तैयार करने हेतु ओरियन्टेशन किया गया। और उन्हें समुदाय कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया गया।
- संस्था द्वारा कोरोना महामारी की दूसरे लहर में समुदाय के तत्कालीन ज़रूरतों पर राहत पहुंचा कर संस्था समुदाय के संघर्ष में साथ खड़ी हो पाईं। जिसके तहत संस्था द्वारा 1610 ज़रूरतमंद परिवार को राशन दिया गया।
- 50 ऐसे परिवार जिनके परिवार में कोविड से मौत हुई थी उन्हें मेडिकल सहयोग दिया गया।
- 50 महिलाओं को उनके रोज़गार को पुनः जीवित करने में सहयोग दिया गया। (यह कार्य वर्तमान में जारी हैं)
- 900 महिलाओं और किशोरियों को हाईजीन किट वितरण किया गया।
- 25 समुदाय की नेत्रियों (समुदाय के बीच सुरक्षित रूप से कार्य करने हेतु) को मेडिकल किट दिया गया।
- 103 डॉपआउट लड़कियों को उनकी शिक्षा को सुचारू रूप से संचालित रखने हेतु (तकनीकी संसाधन, इन्टरनेट सुविधा/ पाठ्यक्रम / फीस) सहयोग किया गया।

8. कार्यक्रम का महत्वपूर्ण परिणामः

- इस वर्ष नेतृत्व विकास प्रशिक्षण से नियमित रूप से (115 लड़कियां) लड़कियां जुड़ी रही हैं। इस कार्यक्रम के दौरान महामारी की स्थिति ने उन्हें अपने भविष्य के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण बनाने में मदद किया हैं। जहां वे अपने लक्ष्यों को आकार दे सकीं और अपने समुदाय में खुद को बदलावकारी पहल का हिस्सा बना सकीं।

- कोरोना काल की स्थिति को ध्यान में रखते हुये प्रत्येक (5 क्षेत्रों में) क्षेत्रों के बीच कोरोना नियमों का पालन करते हुये नेतृत्व विकास प्रशिक्षण का संचालन किया गया। जहां प्रत्येक सत्र को प्रतिदिन के आधार पर नियोजित किया गया। इससे युवा प्रतिभागियों को स्वास्थ्य से जुड़े अपनी सुरक्षा के महत्व को समझने में मदद मिली, और इसने उन्हें अपने स्वयं के इलाके में सुरक्षित स्थान प्रदान किया ताकि वे अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की पितृसत्तात्मक बाधाओं, लिंग भूमिकाओं और अपनी पहचान के बारे में जान सके। और खुद के लिए बेहतर भविष्य बनाने के लिए आज की दुनिया में डिजिटल रूप से साक्षर बनें।
- लड़कियां डिजिटल का उपयोग एक औज़ार के रूप में करने में कुशल हो पाईं हैं। इसी सीख के तहत लड़कियों ने 16 दिवसीय अभियान के तहत महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ लिंग आधारित हिंसा, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर समुदाय स्तर पर अभियान कार्यक्रम चलाये।

- लड़कियों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के लाभ एवं कोरोना टीकाकरण को लेकर समुदाय में फैली भ्रंतियों को दूर करने के लिए प्रत्येक बस्तियों में कोविड–19 टीकाकरण का अभियान चलाया। जिसके तहत उन्होंने समुदाय को कोविड–19 टीका का महत्व और प्रभाव बताकर समुदाय के लोगों को जागरूक किया। इस कार्यक्रम का यह परिणाम रहा कि लोग टीकाकरण को लेकर जागरूक हुए और लगभग 70 प्रतिशत लोगों ने टीकाकरण करवाया।
- लड़कियों ने 10 दिवसीय करियर कॉउन्सिलिंग कार्यशाला में भाग लिया जहां उन्होंने सीखा कि कैसे अपने कौशल की पहचान कर वे खुद को जॉब इन्टरव्यू के लिए तैयार कर सकें। इसके बाद लड़कियों द्वारा गैर–सरकारी संगठन और व्यवासायिक क्षेत्र के विभिन्न संगठनों में नौकरी के अनुभव का दौरा किया गया। और उन्हें उन संगठनों में एक महीने के लिए इंटर्नशिप करने का मौका मिला।

- 245 नईं महिलायें हमारे महिला कार्यक्रम का हिस्सा बनी, अब लगभग 500 महिलाएं महिला कार्यक्रम से जुड़ गईं हैं।
- कोरोना की दूसरी लहर में महिला हिंसा से जुड़े 10 केस उभरकर सामने आये, जिसमें महिला के निर्णय अनुसार संस्था द्वारा सहयोग किया गया।
- महिला मंच से जुड़ी 35 महिलाओं के पास राशन कार्ड नही था, उनके राशन कार्ड के लिए आवेदन कराया गया। और उन्हें सप्लाई इंस्पेक्टर से बात करके फौरी राहत हेतु राशन दिलवाया गया।

- नियमित रूप से संघर्षशील महिलाओं के साथ मुद्दे आधारित चर्चा संचालित हो पाईं। जिसके ज़रिये महिलाओं को अपनी बात रखने का खुला मंच मिल पाया हैं।
- संस्था द्वारा जो भी कार्यक्रम समुदाय स्तर या बड़े स्तर पर हो रहे हैं उनकी झलक न्यूज़ में देखने को मिल रही हैं।
- कोविड–19 की दूसरी लहर में राहत कार्य के ज़रिये समुदाय के बीच संस्था की अन्य संस्थाओं और युवा महिलाओं व लड़कियों तक पहुंच बनी। और 2 नये क्षेत्रों में संस्था ने नेतृत्व विकास का काम शुरू किया।
- कोरोना महामारी के कारण संस्था का कार्यक्रम रणनीतिगत तरीके से ऑनलाइन –ऑफलाइन आयोजित होने लगे हैं।
- संस्था के कार्यकर्ताओं ने डिजिटल डॉक्युमेंटेशन के तरीके अपनाएं हैं। अब कार्यक्रम के तहत जो भी डेटा एकत्रित किया जाता हैं वो सारे गूगल फॉर्म के ज़रिये किया जाने लगा है।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पहले की अपेक्षा आउटरिच बढ़ी हैं।

9. चुनौतियां और रास्तेः

पिछले एक साल में संस्था के कार्यकर्ताओं ने सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के साथ– साथ अपने प्रियजनों को खोने के मामले में विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना किया हैं। कोरोना काल के भयानक समय के दौरान समुदाय के बीच कार्यक्रम को जारी रखना चुनौतीपूर्ण रहा हैं। लेकिन संस्था के कार्यकर्ताओं ने अपने व्यक्तिगत और संस्थागत स्थिति को सन्तुलित करते हुये कार्यक्रम को सफल बनाया है। कार्य में आई चुनौतियां और उस चुनौतियों का हमने कैसे सामना किया इसका विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।

कोविड–19 महामारी– कोरोना महामारी की दूसरी लहर के दौरान तालाबंदी ने हमें एक बार फिर व्यक्तिगत रूप से मिलने से रोक दिया। टीम को इस बार भी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा। उस दौरान हमारा पूरा ध्यान समुदाय के तत्कालीन आवश्यकताओं पर केन्द्रित था। लेकिन मौजूदा परिस्थिति को देखते हुये संस्था के साथी समुदाय में तत्काल चिकित्सा सहायता देने के लिए तैयार नही थे। हमने देखा कि समुदाय में कोरोना महामारी से लोग बुरी तरह से प्रभावित थे। समुदाय में लगातार मौत हो रही थी, लोग अपने परिवार के सदस्यों और अपने करीबी लोगों को खो रहे थे। हाशियाग्रस्त परिवार से आने वाले समुदाय अस्पतालों में भर्ती होने को लेकर बहुत आशंकित थे और यह स्वीकार नही कर रहे थे कि उन्हें कोविड–19 है। इसके अतिरिक्त लड़कियां स्कूल से ड्रॉपआउट हो रही थी। कुछ महिलाएं दूसरी लहर के कारण अपनी आय का स्त्रोत खो चुकी थी और साथ ही जिन महिलाओं ने अपने परिवारों में एकमात्र कमाने वालों को खो दिया था, उन महिलाओं को अपने परिवारों को पालने के लिए बहुत अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे उभरे कई मुद्दों को संस्था द्वारा संबोधित किया गया हैं।

लिंग आधारित हिंसा से संबन्धित चुनौतियां– महामारी के दौरान तालाबंदी के कारण पिछले साल की तरह इस साल भी युवा महिलाओं और लड़कियों को गम्भीर रूप से घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ा। निजी जगहों और सार्वजनिक जगहों पर हो रही हिंसा की घटनाएं दो गुना बढ़ गई। हमने यह भी देखा है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से डिजिटल स्पेस में महिलाओं के साथ उत्पीड़न हुआ हैं और समुदाय की लड़कियों ने इसका सामना गम्भीर रूप से किया है। परिवार ने भी लड़कियों के फोन और इंटरनेट तक पहुंच को नियंत्रित किया हैं। साथ ही उन्हें गतिशीलता प्रतिबंधों और उनसे होने वाली शारीरिक हिंसा का भी सामना करना पड़ा है। संस्था ने इन मुद्दों को संबोधित करते हुए उन्हें कानूनी और नैतिक समर्थन दिया है। साथ ही संस्था द्वारा संघर्षशील महिलाओं के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने का प्रयास किया गया है।

विकेंद्रीकृत प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता का संचालन करना– 5 क्षेत्रों में विकेंद्रीकृत प्रशिक्षण सत्रों का आयोजित करना टीम के लिए थोड़ा चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि उन्हें प्रत्येक क्षेत्रों के लिए प्रत्येक 5 सत्र की अलग– अलग तैयारी करनी होती थी। इसके साथ ही लड़कियों

के परिवार सदस्यों द्वारा नियमित रूप से फोन और इंटरनेट तक पहुंच की कमी भी कुछ प्रतिभागियों के लिए चुनौतीपूर्ण साबित हुई खासकर जब उनकी ऑनलाइन कक्षांए चल रही थी। हालांकि फिर भी वे लड़कियां अपने आस– पास की लड़कियों के साथ और संस्था के साथियों के साथ जुड़कर सीखने में कामयाब रही।

समुदाय के बीच कोरोना टीकाकरण अभियान– क्षेत्रों में कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान के दौरान टीम और समुदाय की नेत्रियों को काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा हैं। कोरोना टीका को लेकर हाशियाग्रस्त समुदाय बहुत ही डरा, सहमा हुआ था। समुदाय वासियों के मन में कोरोना टीका को लेकर बहुत ही गलत भ्रांतियां मौजूद थी, वह किसी की बात सुनने को तैयार नही थे। उनके असहज सवालों का जवाब देना टीम के लिए मुश्किल हो रहा था। समस्याओं को ध्यान में रखते हुये संस्था द्वारा टीकाकरण अभियान लगातार दो महीने जारी रहा रखा गया और समुदाय को लगातार कोरोना टीकाकरण की सही जानकारी दी गई। साथ ही सरकारी (ऐसी डॉक्टर जो हाशियाग्रस्त समुदाय से ही है) डॉक्टर से संपर्क करके जूम सेशन का आयोजन किया गया। जिसके ज़रिये समुदाय से उभरे प्रत्येक सवालों को सम्बोधित किया गया।

10. कार्यक्रम संचालन में कार्यकताओं की सीखः

प्रत्येक वर्ष समुदाय की ज़रूरत और परिस्थिति पर नये आयामों के साथ कार्य करना यह सुनिश्चित करता है कि हमारी संगठन ज़मीनी स्तर पर सक्रिय रूप से कार्य करने के लिए और अधिक प्रभावी तरीके सीखे। जिसके तहत संस्था के कार्यकर्ता प्रत्येक वर्ष कुछ नया सीखते हैं, इस साल भी कार्यकर्ताओं ने कई तरह के सीख हासिल किये हैं, जिसका विवरण नीचे प्रस्तुत हैं।

- टीम ने सीखा कि आने वाले वर्ष में नेतृत्व विकास पाठ्क्रम के लिए हमारा लक्षित दर्शक कौन होना चाहिए और कार्यक्रम को समावेशी कैसे बनाया जा सकता हैं जहां हर उम्र, धर्म, जाति, वर्ग, एकल महिला या विकलांग समुदाय कार्यक्रम का लाभ उठा सके।
- नेतृत्व विकास कार्यक्रम को सुव्यवस्थित किया गया है और संगठन में लंबे समय तक चलने वाला है। करियर परामर्श कार्यशाला पाठ्यक्रम का एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक हैं, यह कार्यक्रम के लिए ताकत के स्तंभों में से एक है और इसे आने वाले वर्षों में भी कार्यक्रम का एक हिस्सा बनाया जायेगा।
- टीम ने ये भी सीखा कि कार्यक्रम से संबंधित साथियों को काम कैसे सौंपना है और हमारे सीखने के घटको की संरचना में मदद करने के लिए युवा लड़कियों और महिलाओं को कैसे शामिल करना हैं। उदाहरण के तौर पर नेतृत्व विकास कार्यक्रम के समापन समारोह में, लड़कियों ने 'खेल–खेल में

नज़रिया बदले' नामक एक युवा मेला की परिकल्पना की और उन्होंने स्वयं मेला डिज़ाइन किया। जहां वे दर्शको के साथ अपने सीखने और पाठ्यक्रम से प्राप्त विषयों के आधार पर चर्चा चला रहे थे।

- संस्था के अन्य चल रहे कार्यक्रमों में नेतृत्व निर्माण पाठ्यक्रम के कार्यक्रम तत्वों को शामिल करने की योजना बना रही हैं ताकि संस्था उन्हें अधिक व्यवस्थित और टिकाऊ बना सकें। संस्था अपने काम का विस्तार करेंगी और नए क्षेत्रों में नये लोगों तक पहुंच बनायेगी। इस पहल से अधिक से अधिक महिलाएं और लड़कियां लाभान्वित होंगी।
- कार्यक्रम के दौरान मेंटरशिप और टीम वर्क की भूमिका पर मुख्य रूप से प्रकाश डाला गया हैं, जिसके तहत मेंटरशिप की प्रक्रिया समुदाय के बीच और संस्था के अंदर, दोनों जगह मूल्य रूप से क्रियान्वित किया जा रहा हैं।
- टीम ने यह भी समझा है कि कैसे कोविड–19 के कारण रणनीतियों को बदलना पड़ा और फिर प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन तरीकों का उपयोग करना पड़ा।
- टीम ने यह भी सीखा कि पाठ्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए समुदाय के भीतर सामुदायिक शिक्षण केंन्द्र स्थापित करना महत्वपूर्ण हैं।
- टीम अभियान कार्यक्रम को मौजूदा मुद्दें से जोड़ने की प्रक्रिया सीख पाईं, साथ ही ये भी समझ पाईं कि हम अभियान के तहत किस मुद्दों को संबोधित कर सकते हैं।
- महिला रोज़गार और महिला हिंसा के मुद्दे पर पहल की प्रक्रिया से जुड़ने पर टीम को मुद्दे की गहराई समझ आई है, जिससे वह महिलाओं के मुद्दे पर ठोस रूप से काम करने के लिए स्वयं को तैयार कर रही हैं।
- टीम ने अपने डिजिटल कौशल पर पहले की अपेक्षा और अधिक काम किया हैं, जिसके फलस्वरूप लड़कियों का एक छोटा समूह सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में तैयार हुआ हैं। जो समुदाय और अन्य संगठनों के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने की प्रक्रिया चला रही हैं।

11. सहयोगी संस्थाः

पिछले एक साल में संस्था ने अन्य नये डोनर संस्थाओं के साथ सम्पर्क किया हैं। इनके सहयोग से संस्था ने समुदाय स्तर के कार्यक्रमों को मज़बूत किया हैं। और समुदाय के तत्कालीन ज़रूरतों को पूरा करने में सक्षम हो पाया हैं। हमारे सहयोगी संस्था जैसे– एजेडब्ल्यूएस, एमपॉवर, ग्लोबल फंड फॉर विमेन, मिदान, निरंतर, प्वाइंट ऑफ व्यू, इनलिंगुआ, गूंज, दसरा, आइप्रोबोनो, ऑक्सफोर्ड सोसाइटी और इण्डिया अगैंस्ट कोविड।

12. सोशल मीडिया लिंकः

Website:- http://sadbhavanatrust.org.in

Facebook: https://www.facebook.com/sadbhavanatrust.lucknow

Instagram: https://www.instagram.com/sadbhavanalko12/

Twitter: https://twitter.com/home

YouTube: https://www.youtube.com/channel/UCm3ckMeo-d6bj2FfNnO6tPw

धन्यवाद!